International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 07-11-2019; Accepted: 09-12-2019
www.advancedjournal.com
Volume 5; Issue 1; Janauaey 2020; Page No. 26-29

भारतीय महिलाओं पर आधुनिकीकरण के धार्मिक एवं साँस्कृतिक प्रभाव

डॉ0 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
प्रवक्ता (समाजशास्त्र विभाग) एस0एस0एम0 (पी0जी0) कांलेज, मानिकपुर, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
पूर्व अध्यायों में प्रस्तुत आनुभविक विवरण से स्प ट है कि आधुनिकीकरण ने ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों को ही प्रभावित नही किया है, अपितु जीवन के धार्मिक तथा साँस्कृतिक पहलुओं को भी अछूता नहीं छोड़ा है। आधुनिकीकरण से पड़ने वाले धार्मिक व साँस्कृतिक प्रभावों को देखने के लिए अनुसंधित्सु ने ग्रामीण महिलाओं पर आधुनिकीकरण के धार्मिक प्रभावों का अध्ययन करके विवेचन प्रस्तुत करने के लिए मानवीय जीवन से सम्बन्धित धार्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों जादू–टौना, गंडा, टैबू, ओझाई, साधू ामनों, झाड़ फूँक आदि में विश्वास, पूजा पाठ, धर्म कर्म, धार्मिक रूचियों में परिवर्तन, धार्मिक भावनाओं में परिवर्तन के प्रति दृ टकोण, हिन्दू विवाह एवं धार्मिक संस्कार के प्रति विचारधारा, आदि पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है

मूल शब्द: अध्यायों, महिलाओं, आधुनिकीकरण, साँस्कृतिक

प्रस्तावना: आधुनिकीकरण के धार्मिक प्रभाव

आधुनिकीकरण के धार्मिक प्रभावों पर प्रकाश डालने से पूर्व, यह परमावश्यक है कि धर्म की अवधारणा को स्प ट कर लिया जाये क्योंकि धर्म ाब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक है तथा विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से परिभा ाित कर अवधारणाएं स्प ट की हैं। धर्म ाब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भा ा की मूल धातु 'धृ' पर आधारित हैय जिसका अर्थ है 'धारण करना' अथवा 'धारण करने वाला' है। प्रो. तिवारी के अनुसार 'धर्म ईश्वर के प्रति मनु य की आस्था नहीं अपितु मनु य के प्रति मनु य का उदार तथा मानवीय कर्तव्य हैय यह सार्वभौम व सर्वमान्य मानव धर्म है जिसमें रूढ़ियों, विधि आदि का बन्धन नहीं है अहिंसा, सत्य, समता व दया आदि मानवीय गुण, धर्म के उप लक्षण कहे जा सकते हैं।' धर्म के सन्दर्भ में वेद व्यास का मत है कि 'धर्मशक्ति, प्रजा तथा समाज को धारण करता करता है' और अधर्म है–अनाचार पापाचार व उच्छृंखला। धर्म श्रे ठ आचार–विचार है। ऋग्वेद में भी सत्य पथ पर चलने के लिए आचार सुधार की आवश्यकता बतलायी है। इस प्रकार धर्म आचार मूलक है, अनाचार मूलक नहीं है। किन्तु सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि धर्म का तात्पर्य किसी अतिमानवीय, अलौकिक अथवा समाज से उच्च ाक्ति में विश्वास है, जिसका आधार भय, श्रद्धा, भक्ति तथा पवित्रता की धारणा है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रार्थना, पूजा अथवा अराधाना द्वारा होती है। इस प्रकार धर्म, विश्वास सम्बन्धी भावनाओं पर आधारित है जिसका आधार ईश्वरीय तथा अलौकिक ाक्ति होती है। परन्तु सामाजिक मानवशास्त्री मैलिनोवस्की ने समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृ टकोणों से धर्म को स्प ट करते हुए लिखा है कि–''धर्म, क्रिया की एक विधि है और साथ ही विश्वासों की एक आस्था, साथ ही व्यक्तिगत अनुभव (अनुभूति) भी है।' इस परिभा ा से स्प ट है कि धर्म का सम्बन्ध कुछ व्यवस्थित विश्वासों तथा क्रियाओं से है। धर्म एक सामाजिक तथ्य है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का धर्म पृथक–पृथक नहीं होताय और न अन्त में धर्म व्यक्तियों के अनुभवों से सम्बन्धित होने के कारण कभी–कभी कुछ सीमा तक परिवर्तित भी हो जात है। समाजशास्त्री प्रो. क्यूवर के ाब्दों में–''धर्म साँस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित वह व्यवहार प्रतिमान है जिसका भावनाओं को व्यक्त करने वाले बाहरी आचरणों से होता है।''

इसका तात्पर्य है कि धर्म का सम्बन्ध एक अधिप्राकृतिक तत्व (यथाः देवी, देवता, देवदूत) अधिप्राकृतिक ाक्ति (यथाः पवित्रता, हिन्दुओं में कर्म की भावना तथा आदिवासियों में माना आदि) तथा अधिप्राकृतिक सत्ता (यथाः आत्मा, स्वर्ग, मोक्ष आदि) से है, इनसे सम्बन्धित विचार जब व्यवस्थित होकर एक ढाँचा प्राप्त कर लेते हैं, तब इसी को हम धर्म कहते हैं। परन्तु फेयर चाइल्ड ने धर्म का सम्बन्ध निम्न तीन आधारभूत मान्यताओं से बताया है–

1. धर्म, ऐसी प्राकृतिक ाक्तियों से सम्बन्धित है जिनका एक दिव्य चरित्र होता है।
2. धर्म में एक सैद्धान्तिक व्यवस्था होती है जिसका सम्बन्ध मानवता तथा देवत्व के मध्य होने वाली अन्तः क्रियाओं से होता है।
3. धर्म के कुछ व्यवहार प्रतिमान होते हैं जो देवीय इच्छा को स्प ट करते हैं तथा व्यक्ति को मिलने वाली समस्त सफलताओं को ईश्वरीय पुरूस्कार अथवा दण्ड के रूप में स्प ट करते हैं। इस प्रकार धर्म का सम्बन्ध अलौकिक ाक्ति से होने के कारण केवल विश्वास पर आधारित है। अतः धर्मय आदिम और सभ्य से सभ्य सभी समाजों की आधारभूत विशे ाता होती है। चूंकि सभी धर्म अपनी एक मानसिक विचारधारा की अभिव्यक्ति तथा अलौकिक ाक्ति के लिये होते हैं। इस प्रकार धर्म, धार्मिक जीवन से सम्बन्धित एक निश्चित अवैयक्तिक, अलौकिक ाक्ति में विश्वास से उत्पन्न हुआ है जो सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं में निवास करता है तथा सम्पूर्ण विश्व में विद्यमान है। इस प्रकार धर्म अलौकिक ाक्ति से सम्बन्धित होने के कारण केवल विश्वास पर ही आधारित है। फलतः धर्म आदिम से लेकर आधुनिकतम सभ्य समाजों की आधारभूत विशे ाता ही कही जा सकती है।

यद्यपि सभ्य समाज में धार्मिक प्रवृत्तियों की ओर से कम रूझान देखने को मिलता है। इसका कारण भौतिकवादी विचारधाएं ही कही जा सकती हैं। अनुसंधित्सु ने अपनी निदर्शितों से जादू–टौना, गंडा, टैबू, देवी, देवताओं तथा इ ट देवों के प्रति भी विश्वास सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। निम्न तालिका उक्त के प्रति विश्वास पर जाति सापेक्ष प्रकाश डालती है–

निदर्शितों से जादू–टौना, गंडा, टैबू, देवी, देवताओं झाड़फूँक के प्रति विपक्ष एवं पक्ष में विश्वास सम्बन्धी विवरण

क्रम	जाति सापेक्ष निदर्शित	निदर्शितों के दृ टकोण (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)							योग	
		जादूटोना		गंडा टैबू		देवी देवता		झाड़फूँक		
		विपक्ष में	पक्ष में	विपक्ष में	पक्ष में	विपक्ष में	पक्ष में	विपक्ष में	पक्ष में	
1	सवर्ण	30(11.19) (25%)	15(21.27) (79.16%)	57(21.27) (79.16%)	11(04.10) (26.87%)	90(33.59) (55.56%)	32(11.92) (39.02%)	10(03.73) (58.82%)	10(03.73) (58.82%)	268(100.00) (53.60%)
2	अनुसूचित व पिछड़ी	90(38.79) (75%)	15(06.47) (68.09%)	15(06.47) (20.84%)	30(12.93) (73.13%)	72(31.03) (44.44%)	50(21.55) (60.98%)	07(03.02) (41.18%)	07(03.02) (41.18%)	232(100.00) (46.40%)

3	योग (प्रतिशत)	120(24.40) (100%)	47(9.40) (100%)	75(16.40) (100%)	41(8.20) (100%)	161(32.40) (100%)	49;16.40) (100%)	17(3.40) (100%)	17(3.40) (100%)	500(100.00) (100%)

उपरोक्त तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विश्ले ाण से स्प ट है कि सवर्ण जाति की सूचनादाताएं कम रूढ़िवादी एवं कम अन्ध विश्वासी पायी गयी हैं अनुसूचित तथा पिछड़ी जातियों में यह धारणाएं अति घनि ठ पायी गयी हैं निम्न तालिका झाड़फूँक, ओझाई, साधु ाामनों में विश्वास/अन्ध विश्वास में कमी आने/न आने के सम्बन्ध में दृ टकोणों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

झाड़फूँक, ओझाई तथा साधुाामनों के प्रति दृटिकोण

कम	के प्रति दृ टकोण	सूचनादाताओं की आवृत्तिया (प्रतिशत)			योग
		झाड़फूँक	ओझाई	ाामन साधु आदि	
1	विपक्ष में	203(62.46)	65(20.00)	57(17.57)	325(65.00)
2	पक्ष में	43(24.57)	81(46.28)	31(29.15)	175(35.00)
3	योग (प्रतिशत)	246(49.20)	146(29.20)	88(17.60)	500(100.00)

उपरोक्त तालिका के प्राथमिक तत्यों के विश्ले ाण से स्प ट है कि अधिकांशतः सूचनादाता आज भी अन्ध विश्वासी हैं। इसपक्ष पर आधुनिकीकरण का कम प्रभाव परिलक्षित हुआ है। इन आनुभविक तथ्यों के प्रकाश में स्प ट है कि आज भी ग्रामीण महिलाएं आधुनिकता तथा परम्परा के मध्य जूझ रही हैं।

धार्मिक भावना (पूजा पाठ, उपवास, धर्मकर्म) पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

ग्रामीण सर्वेक्षित कुल 500 महिला सूचनादाताओं में से अधिकांशतः लगभग 82 प्रतिशत ने धार्मिक भावना रखना स्वीकार किया है। वे नित्य प्रति पूजा पाठ करती हैं। सोमवार तथा शुक्रवार को उपवास रखती हैं, साथ ही विभिन्न देवी, देवताओं के प्रति आस्थावान पायी गयी हैं, वे प्रायः ैव तथा ाावत हैं, इन दिनों (उपवास) में दान देने एवं भिक्षा डालने, भूखे प्यासे के प्रति उदारवादी दृ टकोण भी देखने को मिले हैं। अनुसंधित्सु ने पूछा कि वे ऐसा क्यों करती हैं ? प्रत्युत्तर में बताया गया कि यह तो व्यक्ति विशे ा की धार्मिक भावनाओं पर आधारित है। धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति प्रायः ऐसा करते हैं। निम्न तालिका अध्ययनार्थ चयनित सभी 500 सूचनादाताओं की धार्मिक भावना के प्रति उनके विचारों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

सूचनादाताओं में धार्मिक भावना के प्रति विचार

क्रमांक	धार्मिक भावना के प्रति विचार	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	पक्ष में	389	77.80
2	विपक्ष में	92	18.40
3	उदासीन	18	03.60
4	उत्तर प्रदान नहीं किए	01	00.20
	योग	500	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्य यह स्प ट करते हैं कि निदर्शित कुल 500 महिला सूचनादाताओं में से 389 (77.80 प्रतिशत) ने धार्मिक भावना के पक्ष में, 92 (18.40 प्रतिशत) ने धार्मिक भावना के विपक्ष में 18 (3.60 प्रतिशत) ने धार्मिक भावना के प्रति उदासीन दृ टकोण दर्शायें हैं। मात्र एक (0.20 प्रतिशत) सूचनादाता ने उत्तर प्रदान ही किया है।

अतः इन प्राथमिक विचारों के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि धार्मिक विचारधाराओं पर आधुनिकीकरण का अत्यन्त अल्प प्रभाव परिलक्षित हुआ है।

धार्मिक रूचियों में परिवर्तन

जैसे–जैसे समय बदलता जा रहा है ानैः ानैः आधुनिकता बढ़ रही हैय वैसे–वैसे धार्मिक रूचियों व सम्बन्धित प्रवृत्तियों में परिवर्तन दृ टगोचर प्रतीत होते जा रहे हैं। जिसे मानवीय गुणों पर भौतिकवादिता का प्रभाव ही कहा जा सकता है। इस वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भौतिक संस्कृति के तत्वों में सम्बर्द्धन तथा अभौतिक साँस्कृतिक तत्वों में ह्रास होता जा रहा है जो आधुनिककरण का प्रभाव ही कहा जा सकता है। निम्न तालिका धार्मिक रूचियों में परिवर्तन से सम्बन्धित विवरण पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

धार्मिक रूचियों में परिवर्तन के प्रति सूचनादाताओं के विचार

क्रमांक	धार्मिक रूचियों में परिवर्तन	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	''हां'' (हुआ है)	302	60.40
2	''ना'' (नहीं हुआ है)	198	39.60
	योग	500	100.00

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक तथ्यों के विश्ले ाण से स्प ट होता है कि सर्वेक्षित कुल 500 महिला सूचनादाताओं में से 302 (60.40 प्रतिशत) ने धार्मिक रूचियों में परिवर्तन होना तथा 198 (39.60 प्रतिशत) धार्मिक रूचियों में परिवर्तन नहीं हो रहे हैं, ऐसे विचार व्यक्त किए हैं।

नि क तिः भौतिकवादिता के कारण (जो कि आधुनिकीकरण का एक सूचक है समकालीन परिस्थितियों में मनु यों की धार्मिक भावनाओं तथा रूचियों में परिवर्तन तो हो रहे हैं, परन्तु मन्द गति से। आध्यत्मिक ाक्तियों विश्वास करने तथा विश्वास न करने के सन्दर्भ में सूचनादाताओं के विचारों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है–

आध्यात्मिक ाक्तियों में विश्वास करने तथा विश्वास न करने के सम्बन्ध में सूचनादाताओं के अभिमत

क्रमांक	आध्यात्मिक ाक्तियों में विश्वास के प्रति सूचनादाताओं के अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	विश्वास करती है	311	62.20
2	विश्वास नहीं करती है	184	36.80
3	उत्तर प्रदान नहीं किए	05	01.00
	योग	500	100.00

इस तालिका के तथ्य यह स्प ट करते हैं कि सूचनादाताओं के अभिमतों के अनुसार 311 (62.20 प्रतिशत) महिलाएं आध्यात्मिक ाक्तियों में विश्वास करती हैं तथा 184 (36.80 प्रतिशत) महिलाएं आध्यात्मिक ाक्तियों में विश्वास नहीं करती हैं। यह पूछे जाने पर आप किन–किन आध्यात्मिक ाक्तियों में विश्वास करती हैं, तो प्रत्युत्तर में बताया गया कि वे अपनी कुल देवीयों, तीर्थ स्थलों, मंदिरों, माताओं (शीतला माता, जीर्णमाता, चावड़ माता, भैरूँ जी), बालाजी, ठाकुर जी, अम्बा माता, गणेशजी, ांकर जी आदि के प्रति विशे ा आस्थावान है। वे इनकी समयानुसार पूजा, प्रार्थना, आराधना, अनुनय–विनय श्रद्धा के साथ करती हैं और भाँति–भाँति की मनोती मांगती हैं।

धर्म परिवर्तन के प्रति दृ टकोण

अनुसंधित्सु ने ने सभी 500 निदर्शित सूचनादाताओं से धर्मान्तरण करने के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश

डालती है।

धर्मान्तरण के प्रति जाति सापेक्ष सूचनादाताओं के दृ ि टकोण (अभिमत)

क्रम	सूचनादाताओं की जातियाँ	धर्मान्तरण के प्रति अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)			योग
		पक्ष में	विपक्ष में	उत्तर नही दिए	
1	सवर्ण	02 (0.74)(0.39)	259 (96.64)(58.99)	07 (2.62)(17.57)	268 (100.00)(53.60)
2	अनुसूचित व पिछड़ी	49 (27.72)(99.61)	180 (71.58)(41.01)	03 (1.80)(30.00)	232 (100.00)(46.40)
	योग प्रतिशत	51 (10.20)(100.00)	439 (87.80)(100.00)	10 (2.00)(100.00)	500 (100.00)(100.00)

नोट–को ठक के आँकड़े प्रतिशत दर्शाते हैं।

निर्कातः 10.2 प्रतिशत धर्मान्तरण के पक्ष में, 87.80 प्रतिशत धर्मान्तरण न करने के पक्षकार पाये गये हैं तथा 2 प्रतिशत ने किसी भी प्रकार का प्रत्युत्तर प्रदान नही किया। ग्रामीणों पर आधुनिकीकरण का धर्मान्तरण पर नगण्य प्रभाव परिलक्षित हुआ है।

धार्मिक संस्कारों के प्रति विश्वास

धार्मिक संस्कारों में न्यूनाधिक मात्रा में अधिकांशतः सूचनादाता विश्वास करते पाये गये हैं, शिक्षितों में यह धारणा परिवर्तित प्रतीत हुई है उनके द्वारा संस्कारों को मनाने के तौर तरीके प्रायः अशिक्षितों से भिन्नता रखते हैं। अशिक्षित व कम शिक्षित लोग दूसरों का अनुकरण करते पाये गये हैं।

निम्न तालिका सभी 500 निर्दशितों के अभिमत उक्त सन्दर्भ में दर्शाती है–

धार्मिक संस्कारों को आधुनिक तरीकों से मनाने के प्रति अभिमत

क्रम	हिन्दु जीवन के विभिन्न संस्कार	धार्मिक संस्कारों को आधुनिक तरीकों से मनाने के प्रति अभिमत			योग
		पक्ष में	विपक्ष में	उदासीन	
1	गर्भाधान संस्कार	63 (12.60)	232 (46.40)	205 (41.00)	500 (100.00)
2	नामकरण संस्कार	372 (74.40)	–– (00.00)	128 (25.60)	500 (100.00)
3	मुण्डन संस्कार	500 (100.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	500 (100.00)
4	सीमान्तोनयन संस्कार	–– (00.00)	500 (100.00)	–– (00.00)	500 (100.00)
5	पुंसवन संस्कार	37 (7.40)	400 (80.00)	63 (12.60)	500 (100.00)
6	अन्न प्रासन्न संस्कार	110 (22.00)	287 (57.40)	103 (20.60)	500 (100.00)
7	नि क्रमण संस्कार	–– (00.00)	487 (97.40)	13 (2.60)	500 (100.00)
8	चूड़ाकरण	191 (38.20)	274 (54.80)	35 (7.00)	500 (100.00)
9	कर्ण छेदन (कन्याओं हेतु)	421 (84.20)	–– (00.00)	79 (15.80)	500 (100.00)
10	विद्यारंभ	293 (58.60)	130 (26.00)	77 (15.40)	500 (100.00)
11	उपनयन (उपनेति)	–– (00.00)	208 (41.60)	292 (58.40)	500 (100.00)
12	विवाह संस्कार	500 (100.00)	–– (00.00)	–– (00.00)	500 (100.00)
13	अन्त्येि ट संस्कार	407 (81.40)	–– (00.00)	93 (18.60)	500 (100.00)

नोट–को ठक के आँकड़े प्रतिशत दर्शाते हैं।

उपर्युक्त तालिका हिन्दू जीवन के भारतीय परिप्रेक्ष्य में विभिन्न धार्मिक संस्कारों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है

हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है, के प्रति निदर्शितों के दृटिकोण

क्रमांक	अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	पक्ष में	447	89.40
2	विपक्ष में	42	08.40
	उत्तर प्रदान नहीं किए	11	02.20
	योग	500	100.00

उपरोक्त तालिका यह स्प ट करती है कि सभी 500 सूचनादाताओं में से 'हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है' के प्रति पक्ष में 447 (89.4 प्रतिशत) सूचनादाताओं ने, विपक्ष में 42(8.40 प्रतिशत) ने और 11 (2.2 प्रतिशत) ने इस संदर्भ में किसी प्रकार के प्रत्युत्तर प्रदान नहीं किए। प्रतिशतता की दृ ि ट से हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है सभी ने स्वीकार किया है।

एक विहंगम दृटि में धार्मिक जीवन पर आधुनिकीकरण द्वारा पड़ने वाले प्रभावों के प्रति सभी 500 सूचनादाताओं के अभिमतों पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हैं–

धार्मिक जीवन पर आधुनिकीकरण द्वारा पड़ने वाले प्रभावों के प्रति सूचनादाताओं के अभिमतः एक विहंगम दृ ि ट में

कमांक	आधुनिकीकरण से पड़ने वाले प्रभाव के प्रति सूचनादाताओं के दृटिकोण	आवृत्तियाँ (सहमत के सम्बन्ध में)			योग
		असहमत	आंशिक सहमत	पूर्ण सहमत	
1	प्रभाव पड़ रहा है	––	41	362	403(80.60)
		(00.00)	(10.17)	(89.83)	(100.00)
2	प्रभाव नहीं पड़ रहा है	02	31	21	54(10.80)
		(4.71)	(57.40)	(37.89)	(100.00)
3	तदस्थ उत्तर	15	13	12	40(08.00)
		(37.50)	(32.50)	(30.00)	(100.00)
4	प्रत्युत्तर प्रदान नहीं किए	––	––	03	03(0.60)
		(00.00)	(00.00)	(100.00)	(100.00)
	योग प्रतिशत	17	85	398	500(100.00)
		(3.40)	(17.00)	(79.60)	(100.00)

नोट–को ठक के आँकड़े प्रतिशत दर्शाते हैं।

उपर्युक्त तालिका के तथ्यों के विश्ले ाण से स्प ट है कि 500 निदर्शित ग्रामीण महिला सूचनादाताओं में से ग्रामीणों के धार्मिक जीवन पर आधुनिकीकरण द्वारा पड़ने वाले प्रभावों के सन्दर्भ में 17 (3.40 प्रतिशत) सूचनादाताओं ने प्रभाव न पड़ना, 85 (17 प्रतिशत) ने आंशिक प्रभाव पड़ना तथा 398 (79.60 प्रतिशत) ने प्रभाव पड़ने के प्रति पूर्ण सहमति व्यक्त की है। 500 सूचनादाताओं में से 403 सूचनादाताओं ने प्रभाव पड़ रहा है, 54 सूचनादाताओं ने प्रभाव नहीं पड़ रहा है, 40 सूचनादाताओं ने तटस्थ उत्तर प्रदान किये हैं जबकि 3 सूचनादाता ऐसे भी मिले हैं जिन्होंने इस संदर्भ में किसी भी प्रकार का प्रत्युत्तर प्रदान नही किया है।

निष्कर्ष

अध्ययनार्थ चुनी गई कुल 500 सूचनादाताओं में से ात प्रतिशत सूचनादाताओं ने महिलाओं पर पड़ने वाले धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों को प्रथम दृ टया ही स्वीकार किया है प्रस्तुत आनुभविक ाोध अध्ययन से प्राप्त कुछ प्रमुख नि क र्ा निम्नवत् हैं–

1. आधुनिकीकरण ने धार्मिक अन्धविश्वासों में कमी की है तथा जादू टौना, गंडा, ताबीज, देवी देवताओं के प्रति जो अन्धविश्वास व्याप्त था उसमें काफी कमी हुई है किन्तु धर्म के प्रति नि ठा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
2. सूचनादाताओं ने स्प ट किया है कि झाड़–फूँक, ओझाई, साधु ाामनों में विश्वास की भावना में भी ह्रास हुआ है।
3. कुछ विशि ट प्रसंगों में अन्धविश्वासों में कमी आयी है परन्तु धार्मिक प्रवृति व भावनाओं (धर्म, कर्म भाग्य में) विश्वास जाग्रत हुआ है।
4. आध्यात्मिक ाक्तियों में विश्वास जागृत हुआ है तर्क ाक्ति में वृद्धि होने सम्बन्धी अनुभूति ाोधार्थी ने की है।
5. धर्मान्तरण के पक्ष में 10.2 प्रतिशत तथा विपक्ष में 87.8 प्रतिशत सूचनादाताओं ने अभिमत व्यक्त किये हैं। साधुओं तथा भिखारियों को भिक्षा डालने के प्रति भी मनोवृत्ति परिवर्तित हुई है, कम

संदर्भ सूची

1. तिवारी एस.ः धर्म इन महाभारत 1958, पृ ठ 8
2. वेदव्यास प्रबन्ध सागर, प्रकाशित– आत्माराम एण्ड संस 1953 पृ ठ 403
3. मैलिनोवस्की बी.ः मैजिक, साइन्स एण्ड रिलीजन एण्ड अदर ऐसेज, ग्लेनकों एण्ड कम्पनी, 1948पृ ठ24
4. क्यूवर जे.एफ.ः सोसियोलॉजी : ए सिनापसिस ऑफ प्रिन्सीपिल्स, 1968, पृ ठ 511
5. फेयर चाइल्ड एच.पी.य डिक्शनरी ऑफ सोसियोलॉजी, 1960 पृ. 256
6. मजूमदार डी.एन एण्ड मदान टी.एन. : सोसल एन्थ्रोपोलॉजी, 1961, पृ ठ 151–152 उम्र की सूचनादाताओं ने बताया कि ''पात्र (वृद्धों, अपंग व अपाहित निर्धनों) को ही भिक्षा देनी चाहिये।